

**कलसा** पुं. (तद्.) कलश, घड़ा, पीतल या अन्य धातु का घड़ा, मटका।

**कलसिया** स्त्री. (तद्.) छोटा घड़ा, छोटा कलसा, गगरी।

**कलसिरी** वि. (देश.) 1. झगड़ा करने वाली स्त्री 2. स्त्री. (तद्.) झगड़ालू स्त्री।

**कलसी** स्त्री. (तद्.) 1. छोटा कलश या छोटा घड़ा, गगरी, गगरिया, मटकी।

**कलस्वर** पुं. (तत्.) 1. प्यारा तथा कर्णप्रिय मधुर स्वर, चहचहट, मिनमिनाहट जैसी मधुर ध्वनि जैसे- भँवरों का कलस्वर, गुंजन, चिड़ियों का कलरव।

**कलहंस** पुं. (तत्.) 1. राजहंस 2. हंस 3. परमात्मा, बतख, छंद प्रत्येक चरण में क्रमशः सगण, जगण, दो सगण तथा एक गुरु वर्ण ( सज स स ग) के योग से तेरह वर्णों से निर्मित एक समवर्णिक छंद वि. इस छंद के कुटजा, नंदिनी, सिंहनाद आदि अन्य नाम भी हैं।

**कलहंसिनी** स्त्री. (तत्.) राजहंसिनी, हंसिनी, उत्तम रानी (राजमहिषी)।

**कलह** पुं. (तत्.) विवाद, झगड़ा, क्लेश, वाक्-युद्ध।

**कलहकार** वि. (तत्.) विवादी, रारी, झगड़ालू, झगड़ा करने वाला, कलहकारी।

**कलहकारिणी** वि. (तत्.) 1. झगड़ा करने वाली, विवाद बढ़ाने वाली, झगड़ालू (नारी) 2. स्त्री. झगड़ालू स्त्री, विवादी औरत।

**कलहप्रिय** वि. (तत्.) 1. झगड़ालू 2. कलह करने में संकोच न करने वाला 3. जिसे कलह से भय न हो 4. जो बात-बात में कलह करता हो।

**कलहप्रिया** वि. (तत्.) 1. जो स्त्री बात-बात में कलह करती हो 2. कलह से न डरने वाली 3. झगड़ालू 2. स्त्री. (तद्.) झगड़ालू स्त्री।

**कलहांतरिता** पुं. (तत्.) काव्य. वह नायिका जो अपने पति (प्रिय या नायक) का अपमान करने के बाद पश्चात्ताप करती हो।

**कलहास** पुं. (तत्.) सुंदर या मधुर हास, मंद तथा मधुर ध्वनि या स्वर वाली हँसी, मधुर हास।

**कलहिनी** स्त्री. (तत्.) 1. झगड़ा या विवाद (रार) खड़ा करने वाली स्त्री 2. वि. कलहप्रिया, कलहकारिणी, प्रायः कलह करने वाली।

**कलही** वि. (तत्.) झगड़ा या विवाद खड़ा करने वाला।

**कलाँ** वि. (फा.) बड़े आकार (विस्तार) वाला, दीर्घाकार, बड़ा वि. अनेक ग्रामों के साथ कलाँ या 'खुर्द' का प्रयोग होता है जैसे- कोसी कलाँ, "कोसी खुर्द" है।

**कलाँच** वि. (देश.) 'दरिद्र, निर्धन। 2. अंशभूत उदा. आए हो पठाए वा छती से छजिया के हतै। बीस बिसै उधौ बीरवावन कलाँच हवै -उद्धवशतक रत्नाकर।

**कला** स्त्री. (तत्.) 1. ऐसा कार्य जिसके संपादन के लिए ज्ञान, कौशल तथा अभ्यास तीनों ही आवश्यक हो 2. किसी वस्तु का बहुत छोटा अंश उदा. सब पहचाने से लगते अपनी ही एक कला से -प्रसाद (कामायनी-आनंद सर्ग) 3. अंश, भाग, चंद्रमा या उसके प्रकाश का सोलहवाँ भाग टि. पूर्णिमा के दिन चंद्रमा की सोलह कलाएँ होती हैं और अमावस्या को केवल एक जो प्रतिदिन बढ़ती है और पूर्णिमा के बाद कम होती जाती हैं 4. सूर्य या उसके प्रकाश का बारहवाँ भाग 5. समय का एक विभाग जो तीस काष्ण का होता है 6. राशि के तीसवें अंश का साठवाँ भाग, राशिचक्र के एक अंश का साठवाँ भाग 7. छंदशास्त्र में मात्रा 8. ललित कार्य-यथा-चित्रकला, काव्य कला, मूर्तिकला आदि 9. ललित गुण जैसे प्राचीन ग्रंथों के अनुसार चौंसठ कलाएँ 10. चतुराई, कौशल, निपुणता 11. माया, कपट, छल 12. विद्या, कारीगरी, हुनर 13. गुण, विशेषता 14. विभूति, तेज, प्रभाव उदा. कासी हू की कला गई, मथुरा मसीत भई -भूषण ग्रंथ 15. शक्ति, सामर्थ्य 16. शोभा, छटा 17. प्रभा, ज्योति, कांति 18. तरंग, लहर उदा. छूटी लट डुलति कलाजनु कलंदिनी-पजनेस कदि